RESEARCH PAPER | Literature | Volume : 3 | Issue : 5 | May 2013 | ISSN - 2249-555X

समकालीन हिंदी कविता में दलित जीवन का यथार्थ
Samkalin Hindi Kavita me Dalit Jivan Yarthat

KEYWORDS

Dr. Sanjay Rathod

Assistant Professor, Hindi Department, Dr. Babasaheb Ambedkar Marathvad University, Aurangabad.

समकालीन कविता का कैनवास काफी विस्तृत है। समकालीन कवियों ने अपनी कविता में केवल प्रेम, सौंदर्य और प्रकृति को ही महत्त्व नहीं दिया है, बल्कि उन्होंने समय के अनुरूप आम आदमी की स्थिति को भी परखने की कोशिश की है। आज की हिंदी कविता में स्री की संवेदना, दलितों पर किये गये अत्याचार एवं आदिवासी जन-जीवन को महत्त्व दिया जा रहा है। यह सच है कि काल एवं समय के अनुरूप समकालीन काव्य लेखन के संदर्भ भी बदल रहे हैं। ऐसा कहा जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है। लेकिन मेरी दृष्टि से साहित्य केवल विशिष्ट वर्ग का ही प्रतिनिधित्व कर रहा है। इसलिए साहित्य के अन्तर्गत दलित यथार्थ का सत्य, आदिवासी का जीवन एवं वनों, जंगलों में घुमकर अपना जीवन बीतानेवाले घुमन्तू जैसी जनजातियों का चिाण नहीं के बराबर है। लेकिन आज के दौर दलित एवं आदिवासी पर लेखन किया जा रहा है। उसी प्रकार घुमन्तू जनजातियों पर भी लेखन होना आवश्यक है।

प्राचीन काल से ही उच्चवर्गीय समाज द्वारा दलित एवं पिछड़े हुए समाज का ९ो»ाण होता आया है। मराठी एवं हिंदी के कुछ कवियों ने अपनी लेखनी के माध्यम से छुआछूत एवं अर्स्पृय की जड़ों को उखाड़ने की कोर्िा की है। मराठी के कुछ कवियों ने दलित एवं बंजारा, कैकाड़ी, वडर आदि जनजातियों की स्थितियों का चिाण किया है। प्राचीन कवियों ने भी अपने काव्य में जातियता एवं अर्स्पृयता को मिटाने के लिए समाज में जनजागृति का कार्य किया है। मराठी में तुकाराम, ज्ञानेश्वर, नामदेव, चोखामेळा, एकनाथ समर्थ रामदास आदि संत कवि मराठी दलित साहित्य के आदर्श बने। उसी प्रकार हिंदी में कबीर, रविदास, मीराबाई आदि भक्त कवि हिंदी दलित साहित्य के प्रेरणा स्रोत बने हैं। इन कवियों ने तत्कालीन सामाजिक उँच-नीच के भेदभाव को मिटाने का संदेश दिया है। कबीर का साहित्य जाति-पाती एवं अन्याय के खिलाफ हस्तक्षेप करके सभी समाज के वर्गो का नेतृत्व करता है। कबीर ने जातीय व्यवस्था व सामन्तवाद का विरोध किया है। इसलिए उनके काव्य में हिंदू-मुसलमान, ब्राह्मणों और शूद्रों आदि के संकेत मिलते हैं।

’’जन्मत शुद्र, भये पुनि शूद्रा।
क्रििम जनेउ, घालि जंग दुंद्रा॥
तथा
जाति-पाँति पूछे न कोई
हरि का भजे से हरि का होई।’’

डॉ. सुमन सिंह ने कहा है कि, ’’मराठी एवं हिंदी के संत साहित्य में सभी संत कवियों ने वर्ण-व्यवस्था, जाति-पाँति, ब्राह्मणर्ें्रुद्र, मूर्ति पुजा और पाखंड का विरोध किया है। इन्होंने अपनी बात अपनी भा™ाा, भजन एवं दोहों के माध्यम से कहीं है। संत नामदेव, संत कबीर, नाभादास, दादू दयाल, सुंदरदास आदि सभी संत कवियों की वाणी में दलित चेतना के स्वर देखे जा सकते हैं।’’[१]

वैसे तो आधुनिक काल से दलित कविता का आरंभ माना जा सकता है। हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा संपादित "सरस्वती" पििका में ’हीराडोम’ नाम की भोजपूरी कविता "अछूत की शिकायत" नाम से छपी थी। यह हिंदी कविता में प्रथम दलित कविता मानी जाती है। उसके पश्चात् हिंदी के कुछ कवियों ने अपनी कविता में दलित के जीवन के अंश को स्पर्श करने का प्रयास किया है। लेकिन उनकी दृष्टि सीमित ही रही है। उन्होंने केवल दलितों को ’बहुजन हिंताय, बहुजन सुखाय’ के रूप में ही देखा है। नागार्जुन, निराला जैसे कवियों ने दलितों एवं पिछड़े हुए समाज के शोषितों के विविध रूपों को चिाित किया है। निराला ने ’शिवाजी का पा’ कविता में शूद्रों की दयनीय स्थिति पर चिंता व्यक्त की है। निराला की दृष्टि से भारत में जब तक शूद्रों की स्थिति दनयीन रहेगी, तब तक भारत देश का भविष्य अन्धकारपूर्ण ही बना रहेगा। निराला कहते हैं -

’’जारी रहेगी यदि
इसी तरह आपस में
उच्च जातियों की घृणा
द्वद कलह, वैमनस्य ’’

इसलिए निराला उच्च जातियों की घृणा का विरोध करता है। तत्कालीन समाज में कवि उच्च-निच को समान देखना चाहता है। उस समय भी दलितों एवं बहुजनों का खुलेआम शोषण किया जाता था। इसलिए कवि समाज में फैलनेवाले द्वंद्व, कलह एवं वैमनस्य की आशंका जताते हैं। कवि की दृष्टि से इसका भयावह परिणाम हमारी सामाजिक व्यवस्था पर हो सकता है। कवि निराला बहुजनों के अस्तित्व को लेकर एक नये परिवर्तन एवं क्राती की बात करते हैं -

’’स्वप्न सा विलीन हो जायगा अस्तित्व सब।

दूसरी ही तरंग कोई फिर फैलेगी।’’

निराला की ’दलित जन को करो करूणा’ कविता दलित की करूणा को व्यक्त करती है। निराला कहते हैं -

’’दलित जन पर करो करूणा।
दीनता पर उतर आये
प्रभु, तुम्हारी शक्ति अरूणा।
हरे तन पर - मन प्रीति पावन,
मधुर हो मुख मनोभावन
सहज चितवन पर तरंगित
जो तुम्हारी किरण-तरूणा।’’[२]

नागार्जुन की बहुत सारी कविताएँ दिन दलितों एवं पिछड़े हुए समाज के प्रति प्रतिबद्ध है।

हिंदी कविता में आठवा दशक महत्त्वपूर्ण माना जाता है। समय के साथ साहित्य में भी परिवर्तन हुआ। इस दशक में कुछेक कवियों ने सही मायने में दलितों के जीवन पर कविताएँ लिखी है। हिंदी कवियों ने दलित कविता में मानव की अनुभूति को व्यक्त किया। इसके पश्चात् दलित और गैर दलित कवियों ने सामाजिक विषमता का खण्डन करके दलितों एवं पिछड़े हुए समाज पर कविताएँ लिखी है। भारतेंदु युगीन कवियों ने दलितों की समस्याओं को आँकने की कोशिश की है। लेकिन परवर्ती काल में समय के अनुरूप दलित कविता का दायरा बढ़ने लगा। प्रगतिवाद में निराला नागार्जुन जैसे कवियों ने मध्यमवर्गीय लोगों की संवेदना को समझने का प्रयास किया है। वैसे तो नब्बे दशक के बाद दलित कविता का विकास अधिक हुआ है। चाहे मनोज सोनकर का ’शोषितनामा’ रहे या पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी का ’मूक माटी की मुखरता’, ओमप्रकाश वाल्मीकि का ’बस्स बहुत हो चुका अब’ इत्यादि। इन्होंने दलितों के भोगे हुए जीवन के अनुभवों को सरल भाषा में व्यक्त किया है। ओमप्रकाश वाल्मीकि ने ’अब और नहीं...’ की ’एक ओर युद्ध’ कविता में हजारों साल की यातना को मिटाने की बात कहीं है। कवि सदियों से उच्चवर्णिय द्वारा पीड़ित दलित समाज को युद्ध के माध्यम से नये परिवर्तन की माँग करता है। वह ऐसे माहौल में आदमी बनने की कोशिश करता है। भ्रष्ट व्यवस्था में दलितों को आज भी हार माननी पड़ती है। आज भी दलितों के जीवन को नफरत से देखते हैं। उनके हँसने, बोलने के ढंग पर उन्हें अपमानित होना पड़ता है। कवि एक ओर युद्ध में आदमी के संघर्ष को मानवीयता की दृष्टि से देखता है। ओमप्रकाश वाल्मीकि कहते हैं -

’’जब-जब भी तुम कोशिश करते हो
आदमी बनने की
वे चौकन्ने होकर
लग जाते हैं तैयारी में
एक ओर युद्ध की
... ऐसे माहौल में
तुम जब भी करते हो कोशिश
आदमी बनने की
वे लग जाते हैं तैयारी में
एक और युद्ध की !’’[३]

इक्कीसवीं शताब्दी के दौर में दलितों के जीवन-परिवर्तन को लेकर कविताएँ लिखी जा रही है। इन कविताओं में दलितों का संघर्ष, मुक्ति आंदोलन, अज्ञानता, दरिद्रता, सामाजिक गुलामी से मुक्ति, अछूतों के लिए आजादी, दलितों की पीड़ा और व्यथा आदि को महत्त्व दिया जा रहा है। मोहनदास नैमिशराय, रमणिका गुप्ता, मलखान सिंह, ओमप्रकाश वाल्मीकि, श्यौराजसिंह बैचेन, प्रेम कपाड़िया, जयप्रकाश लीलवान आदि कवियों द्वारा आज हिंदी दलित कविता को आगे बढ़ाया जा रहा है। इसके अतिरिक्त विभिन्न दलित पििकाओं में ’दलित-अस्मिता’, ’युद्धरत आम आदमी’

Volume : 3 | Issue : 5 | May 2013 | ISSN - 2249-555X

आदि पत्रिकाओं में दलित विमर्श की चर्चा जोर-शोर से हो रही है। आज के दौर में भी जातीयता के नाम पर अन्याय और शोषण हो रहा है। डॉ. अनिता सूर्या की 'जातीयता' कविता आज के दलितों की भयावह स्थिति का जिक्र करती है। कवि कहते हैं -

''उसने कहा- जातीयता नष्ट हुई
मैंने कहा - और बढ़ी
उसने कहा यह आरोप है
मैंन कहा सत्य है
.... पहले की अपेक्षा यह पौधा अधिक विषैला है
हाल वही केवल चाल बदली है
विष वही केवल आवरण बदला है
डंक वही केवल दांत बदले हैं
वार वहीं केवल हाथ बदले हैं।''[४]

दलित चेतना की दृष्टि से मनोज सोनकर, रमणिका गुप्ता, मोहनदास नैमिशराय, मलखानसिंह, ओमप्रकाश वाल्मीकि आदि कवियों की कविताएँ महत्त्वपूर्ण मानी जा सकती है। इन कवियों ने सदियों से भोगे हुए दलितों के अनुभवों को व्यक्त किया है। मनोज सोनकर का 'शोषितनामा' तथा 'शबरी सम्बोध' में तत्कालीन दलितों के शोषण का चित्रण आया है। दलित, सर्वहारा शोषित है। 'शबरी संबोध' संग्रह में शबरी नाम का पात्र दलित, शोषित एवं सर्वहारा का प्रतिनिधित्व करता है। कवि सीता जैसे पौराणिक स्त्री पात्र के माध्यम से आधुनिक नारी की अस्मिता एवं छटपटाहट को व्यक्त करते हैं। आज भी सीता जैसी अनेक नारियों को अपने पती के संशय एवं सामाजिक व्यवस्था में अपने जीवन की अग्निपरीक्षा देनी पडती है। उस समय शबरी जैसे पात्रों के आवाज को दबाया जाता था। लेकिन आज समय के अनुरूप यह स्थिति बदल रही है। इसलिए आज दलित नव कवियों ने दलितों नारियों की स्थिति को परिवर्तन के रूप में देखा है। मलखान सिंह, ओमप्रकाश वाल्मीकि ने दलितों के भोगे हुए यथार्थ को अपनी कविता में स्थन दिया है। इसलिए उनकी अनेकों कविताएँ सामाजिक वि÷ाम व्यवस्था में भी दलितों के प्रगती की नयी दिँा तय करती है। ब्राह्मणवादी संस्कृति की जगह नयी संस्कृति का महत्त्व रहा है। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, ज्योतिबा फुले एवं सावित्रीबाई फुले के विचारों का गहरा प्रभाव दलित कवियों पर दिखायी दे रहा है। 'घुरहू का घोषणापत्र' कविता में समाज में स्थित ब्राह्मण सभ्यता में उपेक्षित, दलित एवं शुद्रों की स्थिति की पहचान है। कवि की दृष्टि से मनुष्य की पहचान धर्म, जाति, वर्ण, रंग-रूप के आधार पर होनी चाहिए, बल्कि मानवीयता के आधार पर होनी चाहिए। मनोज सोनकर एवं ओमप्रकाश वाल्मीकि तथा मलखानसिंह की अनेक कविताएँ हिंदू धर्म की वर्ण-व्यवस्था का पर्दाफाश करती है। मनोज सोनकर की 'घुरहू का घोषणापत्र' कविता समाज में दलितों को न्याय मिलने का घोषणापत्र घोषित करती है। 'शोषितनामा' काव्य संग्रह में मनोज सोनकर कहते हैं -

''हम मनुष्य है
और मनुष्य के रूप में अपनी पहचान कराना चाहते हैं
जो हमें मनुष्य नहीं मानेगा
जो हमें मनुष्य के रूप में नहीं पहचानेगा
उसका हर घेरा हम तोड़ देंगे।
चाहे वह कितना ही पुराना क्यों न हो
... खून हमारी रंगों में भी बहता है
लाल खून बहता है ! मुर्ख खून बहता है !''[५]

आज के युवा दलित कवियों ने भी अपनी कविता में दलित चेतना को गहरे रूप में उभारे की कोशिश की है। पारंपरिक दलित कवियों की अपेक्षा उनकी आवाज बुलंद है। मलखान सिंह, निर्मला पुतुल, ओमप्रकाश वाल्मीकि, नवेन्द्र महर्षि आदि कवियों द्वारा दलित पर अधिक कविताएँ लिखी जा रही है। दलित कवि मलखान सिंह ने अपने 'सुनो ब्राह्मण' काव्य-संग्रह में ब्राह्मणवादी संस्कृति का पर्दाफाश किया है। इसमें कवि ब्राह्मणवादी सोच का खण्डन करके दलितों को एक मनुष्य की तरह देखता है। यह मनुष्यता ही इसमें महत्त्वपूर्ण हैं। कवि अमानुष संस्कृति को ललकारते हुए कहते हैं -

''सुनो ब्राह्मण
हमारे पसीने से बू आती है, उन्हें
ग ग ग... तुम, हमारे साथ आओ
चमड़ा पकाएंगे दोनों मिल-बैठकर
ग ग ग शाम को थककर पसर जाओ धरती पर
सूँघों खुद को
बेटों को, बेटियों को
तभी जान पाओगे तुम
जीवन की गंध को
बलवती होती है जो
देह की गंध से।''[६]

इस प्रकार आज दलित कविता अपने अधिकारों एवं न्याय के प्रति प्रतिबद्ध है। समय आने पर वह शोषित वर्ग को आवाहन भी करती है। वैसे तो समकालीन दलित-कविता में दलितों एवं बहुजनों के जीवन के विभिन्न संदर्भों का महत्त्व रहा है। आज के नव दलित कवियों ने दलित के शोषण को मिटाने के लिए संघर्ष एवं नये परिवर्तन को अपनी कविता में स्थान दिया है। सभी दलित कवियों ने समाज में स्थित वर्ण-व्यवस्था वर्ग-भेद, जातीयता, उँच-नीच का विरोध करके दलितों के जीवन के लिए संघर्ष करने की नयी चेतना उत्पन्न की है। इसलिए आज सभी भारतीय साहित्य के अन्तर्गत दलित एवं आदिवासी विमर्श को लेकर अधिक लेखन किया जा रहा है।

REFERENCE

१. डॉ. सुमन सिंह, समकालीन हिंदी कविता में दलित चेतना, पृ. ७७ द्य २. निराला, राग-विराग (काव्य-संकलन), पृ. १३२ द्य ३. ओमप्रकाश वाल्मीकि, अब और नहीं..., पृ. ४७, ४९ द्य ४. डॉ. विमल थोरात - संपा. दलित अस्मिता, पृ. ११० द्य ५. मनोज सोनकर, शोषितनामा, पृ. ९६ द्य ६. ीजजचध्ंदपांदजण्इसवहेचवजण्बवउ (मलखान सिंह की कविता)